समाचार वाणी
ख़बर जो करें असर !

नाशिक | Tuesday, 22 September 2026

# भारत का सबसे भारी सैटेलाइट लॉन्च करने जा रहा ISRO, समुद्र मे चीन की दादागिरी को देगा करारा जवाब

Publisher

Published on 27 Oct 2025

भारत की अंतरिक्ष शक्ति एक बार फिर इतिहास रचने की कगार पर है। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) 2 नवंबर को देश के इतिहास की **सबसे भारी सैटेलाइट** लॉन्च करने की तैयारी में है। इस सैटेलाइट का वजन लगभग **4400 किलोग्राम** है, जो न केवल तकनीकी रूप से एक बड़ी उपलब्धि है, बल्कि भारत की **समुद्री सुरक्षा रणनीति** में भी अहम भूमिका निभाने जा रही है।

यह सैटेलाइट विशेष रूप से भारतीय नौसेना के लिए डिजाइन की गई है और इसका मुख्य उद्देश्य समुद्री सीमाओं की निगरानी, दुश्मन जहाजों की गतिविधियों पर नज़र रखना और हिंद महासागर क्षेत्र (Indian Ocean Region) में सुरक्षा बढ़ाना है। माना जा रहा है कि इस सैटेलाइट की मदद से भारत की **मैरिटाइम डोमेन अवेयरनेस (Maritime Domain Awareness)** क्षमता में कई गुना वृद्धि होगी।

## ISRO का अब तक का सबसे महत्वाकांक्षी मिशन

इसरो के इतिहास में यह मिशन इसलिए खास है क्योंकि यह संगठन का अब तक का सबसे भारी सैटेलाइट लॉन्च है। पहले इसरो ने 3,400 किलोग्राम तक के सैटेलाइट्स लॉन्च किए थे, लेकिन इस बार का मिशन न केवल वजनी है बल्कि तकनीकी दृष्टि से भी चुनौतीपूर्ण है।

इस मिशन को श्रीहरिकोटा स्थित सतीश धवन स्पेस सेंटर से लॉन्च किया जाएगा। इसके लिए इसरो अपने सबसे शक्तिशाली रॉकेट **GSLV Mk III (LVM3)** का इस्तेमाल करेगा, जो पहले भी चंद्रयान-3 और गगनयान मिशनों में अहम भूमिका निभा चुका है।

## नौसेना के लिए तकनीकी कवच बनेगी यह सैटेलाइट

भारतीय नौसेना के बेड़े को यह सैटेलाइट एक नई तकनीकी दृष्टि देने वाली है। 4400 किलोग्राम की इस सैटेलाइट को उच्च कक्षा में स्थापित किया जाएगा, जहां से यह समुद्री इलाकों पर निरंतर निगरानी रख सकेगी। इससे नौसेना को दुश्मन जहाजों, पनडुब्बियों और संदिग्ध गतिविधियों की सटीक जानकारी मिलेगी।

यह सैटेलाइट समुद्र में होने वाली **चीन की बढ़ती दादागिरी** और उसके स्पाई शिप्स की हरकतों पर लगाम लगाने में भी मदद करेगी। हाल के वर्षों में चीन ने हिंद महासागर में अपनी मौजूदगी बढ़ाई है, जिससे भारत की सुरक्षा चिंताएं बढ़ी थीं। अब यह सैटेलाइट भारत को एक “तकनीकी आंख” देगी जो सैकड़ों किलोमीटर दूर तक हर गतिविधि पर नजर रख सकेगी।

## ‘मेड इन इंडिया’ तकनीक से तैयार

इस मिशन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह पूरी तरह से **‘मेड इन इंडिया**’ तकनीक पर आधारित है। सैटेलाइट के सेंसर, ट्रांसपोंडर और सॉफ्टवेयर सिस्टम सभी भारतीय इंजीनियरों द्वारा विकसित किए गए हैं। यह ‘आत्मनिर्भर भारत’ की दिशा में एक और बड़ा कदम है, जो यह साबित करता है कि भारत अब अंतरिक्ष और रक्षा दोनों क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता की ओर तेजी से बढ़ रहा है।

## रणनीतिक बढ़त और भू-राजनीतिक प्रभाव

यह लॉन्च केवल वैज्ञानिक उपलब्धि नहीं, बल्कि रणनीतिक दृष्टि से भी बेहद महत्वपूर्ण है। हिंद महासागर क्षेत्र (IOR) में भारत और चीन के बीच बढ़ती प्रतिस्पर्धा अब नई दिशा ले रही है। चीन लगातार श्रीलंका, मालदीव और अफ्रीका के कुछ हिस्सों में अपनी नौसैनिक उपस्थिति मजबूत कर रहा है।

ऐसे में भारत का यह नया सैटेलाइट मिशन हिंद महासागर में **रियल-टाइम निगरानी** को संभव करेगा, जिससे चीन की किसी भी अप्रत्याशित गतिविधि पर तुरंत प्रतिक्रिया दी जा सकेगी। रक्षा विशेषज्ञों का कहना है कि यह सैटेलाइट भारत को ‘**सिचुएशनल अवेयरनेस**’ में आत्मनिर्भर बना देगा।

## ISRO की लगातार बढ़ती क्षमता

पिछले कुछ वर्षों में इसरो ने अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में कई कीर्तिमान स्थापित किए हैं। *⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰-3* की ऐतिहासिक सफलता के बाद अब यह मिशन इसरो की तकनीकी शक्ति को और भी ऊंचाई पर ले जाएगा। इससे भारत न केवल अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में अग्रणी देशों की श्रेणी में अपनी स्थिति मजबूत करेगा बल्कि रक्षा क्षेत्र में भी तकनीकी प्रभुत्व स्थापित करेगा।

इसरो के वैज्ञानिकों के अनुसार, इस मिशन में अत्याधुनिक संचार प्रणाली, मल्टी-फ्रीक्वेंसी सेंसर और डेटा एनालिसिस सिस्टम लगाए गए हैं, जो इसे दुनिया की सबसे एडवांस सैटेलाइट्स में से एक बनाते हैं।

## भारत की सुरक्षा मे एंक नई दिशा

यह मिशन इस बात का स्पष्ट संकेत है कि भारत अब केवल सीमाओं पर नहीं, बल्कि समुद्र और अंतरिक्ष दोनों मोर्चों पर अपनी सुरक्षा रणनीति को सुदृढ़ कर रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पहले ही कहा था कि “21वीं सदी में समुद्री शक्ति ही वैश्विक शक्ति का आधार बनेगी,” और यह सैटेलाइट मिशन उसी दृष्टि की ओर एक बड़ा कदम है।

इस लॉन्च के बाद भारतीय नौसेना को दुश्मन की हर चाल का रियल-टाइम डेटा मिलेगा, जिससे किसी भी खतरे का पहले से अनुमान लगाया जा सकेगा। रक्षा विश्लेषकों का मानना है कि यह सैटेलाइट आने वाले दशकों में भारत की **ब्लू वाटर नेवी** बनने की दिशा में निर्णायक भूमिका निभाएगी।

ISRO का यह मिशन केवल एक सैटेलाइट लॉन्च नहीं, बल्कि भारत की बढ़ती तकनीकी और सामरिक शक्ति का प्रतीक है। यह दिखाता है कि भारत अब अंतरिक्ष में ही नहीं, बल्कि महासागरों की गहराइयों तक अपनी पैठ बना चुका है।

जब 2 नवंबर को यह सैटेलाइट अंतरिक्ष में पहुंचेगी, तब न केवल इसरो के वैज्ञानिकों का सपना पूरा होगा, बल्कि यह भारत की आत्मनिर्भरता, रक्षा सामर्थ्य और वैज्ञानिक क्षमता का भी गर्वित प्रदर्शन होगा।

---

DISCLAIMER: the views/contents expressed/presented herein, within this advertorial and promotional feature are the sole and exclusive responsibility of individual clients/expert/their authorised representative/Publisher, to which effect, publication house/its representative/affiliates are not responsible/liable whatsoever.